"बिधि"

- किन बिधि मिलै गुसाई मेरे राम राइ । कोई ऐसा संत सहज सुख दाता मोहि मारग देई बताई ।1। रहाउ ।

अर्थः- हे मेरे प्रभु बादशाह ! मुझे धरती का पति प्रभु किन तरीकों से मिल सकता है ? आत्मिक अडोलता का आनंद देने वाला कोई ऐसा संत मुझे मिल जाए, जो मुझे रास्ता बता दे ।

अंतरि अलख न जाई लखिआ विचि पड़दा हउमै पाई । माइआ मोहि सभो जग सोइआ इह भरम कहहु किउ जाई ।1।

अर्थः- हरेक जीव के अंदर अदृश्य प्रभु बसता है । पर जीव को ये समझ नहीं आ सकती, क्योंकि जीव के अंदर अहंकार का पर्दा पड़ा हुआ है । सारा जगत ही माया के मोह में सोया पड़ा है । हे भाई ! बता, जीव की ये भटकना कैसे दूर हो ?

• एका संगति इकत ग्रिह बसते मिलि बात न करते भाई ।
एक बसत बिन पंच दुहेले ओह बसत अगोचर ठाई ।2।

अर्थः- हे भाई ! आत्मा और परमात्मा की एक ही संगति है, दोनों एक ही हृदय घर में बसते हैं, पर आपस में मिल के कभी बात नहीं करते । एक नाम पदार्थ के बिना जीव की पाँचों ज्ञानेंद्रियां दुखी रहती हैं । वह नाम पदार्थ ऐसी जगह में है, जहाँ ज्ञानेंद्रियों की पहुँच नहीं ।

जिस का ग्रिह तिनि दीआ ताला कुंजी गुर सउपाई । अनिक उपाव करे नही पावै बिन सतिगुर सरणाई ।3।

अर्थः- हे भाई ! जिस हरि का ये बनाया हुआ शरीर घर है, उसने ही मोह का ताला मारा हुआ है, और चाबी गुरु को सौंप दी है । गुरु की शरण पड़े बिना जीव और - और अनेक उपाय करता है, पर उन कोशिशों से परमात्मा को नहीं ढूँढ सकता ।

• जिन के बंधन काटे सतिगुर तिन साधसंगति लिव लाई ।
पंच जना मिलि मंगल गाइआ हरि नानक भेद न भाई ।4।

अर्थः- हे सतिगुर ! जिस के माया के बंधन तूने काट दिए, उन्होंने साध - संगत में टिक के प्रभु से प्रीति बनाई । हे नानक ! कह: उनके पाँचों ज्ञानेंद्रियों ने मिल के महिमा का गीत गाया । हे भाई ! उनमें और हरि में कोई फर्क ना रहा ।

मेरे राम राइ इन बिधि मिलै गुसाई । सहज भइआ भ्रम खिन महि नाठा मिलि जोती जोति समाई ।1। रहाउ दूजा ।

अर्थः- हे मेरे पातशाह ! इन तरीकों से धरती का पति परमात्मा मिलता है । जिस मनुष्य को आत्मिक अडोलता प्राप्त हो गई है, उसकी माया की खातिर भटकना एक पल में दूर हो गई । उसकी ज्योति प्रभु में मिल के प्रभु में ही लीन हो गई ।

ऐसो परचउ पाइओ । करि किृपा दइआल बीठुलै सतिगुर मुझहि बताइओ ।1।रहाउ।

अर्थः- (परमात्मा के साथ मेरी) ऐसी साझ बन गई कि उस माया के प्रभाव से परे टिके हुए दयाल प्रभु ने मेरे ऊपर कृपा की और मुझे गुरु का पता बता दिया।

जत कत देखउ तत तत तुम ही मोहि इहु बिसआस होई आइओ । के पहि करउ अरदासि बेनती जउ सुनतो है रघुराइओ ।1।

अर्थः- गुरु की सहायता से अब मुझे ये विश्वास हो गया है कि मैं जिधर भी देखता हूँ, हे प्रभु ! मुझे तू ही तू दिखाई देता है । हे भाई ! मुझे यकीन हो गया है कि जब परमात्मा स्वयं जीवों की अरदास विनती सुनता है तो मैं उसके बिना और किस के पास आरजू करूँ, विनती करूँ ?

- लहिओ सहसा बंधन गुरि तोरे तां सदा सहज सुख पाइओ । होणा सा सोई फुनि होसी सुख दुख कहा दिखाइओ ।2।

अर्थः- हे भाई ! गुरु ने जिस मनुष्य के माया के बंधन तोड़ दिए, उसका सारा सहम फिक्र दूर हो गया, तब उसने सदा के लिए आत्मिक अडोलता का आनंद प्राप्त कर लिया । उसे यकीन बन गया कि प्रभु की रजा के अनुसार जो कुछ होना था, वही होगा उसके हुक्म के बिना कोई सुख या कोई दुख कहीं भी दिखाई नहीं दे सकता ।

खंड ब्रहमंड का एको ठाणा गुरि परदा खोल दिखाइओ ।
नउ निधि नाम निधान इक ठाई तउ बाहरि कैठै जाइओ ।3।

अर्थः- हे भाई ! गुरु ने जिस मनुष्य के अंदर से अहंकार के पर्दे खोल के परमात्मा के दर्शन करा दिए, उसे परमात्मा के सारे खण्डों - ब्रहमण्डों का एक ही ठिकाना दिखाई देता है । जिस मनुष्य के हृदय में ही गुरु की कृपा से जगत के नौ ही खजानों का रूप प्रभु नाम खजाना आ बसे, उसे बाहर भटकने की जरूरत नहीं रहती ।

एके कनिक अनिक भाति साजी बहु परकार रचाइओ । कहु नानक भरम गुरि खोई है इव ततै तत मिलाइओ (5-204-205)

अर्थः- हे भाई ! जैसे एक सोने से सुनियारे ने गहनों की अनेक किस्मों के बनतर रूप बना दिए वैसे ही परमात्मा ने कई किस्म की ये जगत रचना रच दी है । हे नानक ! कहः गुरु ने जिस मनुष्य का भ्रम -भुलेखा दूर कर दिया, उसको उसी तरह का हरेक तत्व मूल तत्व प्रभु में मिलता दिखता है जैसे अनेक रूपों के गहने फिर सोने में ही मिल जाते हैं ।

(पाठी माँ साहिबा)

हक हक हक

(शब्द गुरु प्रत्यक्षता)

ऐक शब्द

उपरोक्त अर्थों में कहे गये गुरू-सतगुरू-शबद-नाम-सच्चा नाम इत्यादि विशेष - विशेषो का केवल और केवल ऐक ही अर्थ विशेष है कि – "रागमई प्रकाशित सुगधित आवाज़ विशेष" । इसके आलावा सारे अर्थ केवल मनमत हैं - गुरूमत का इससे कोई संबंध विशेष नहीं हैं ।

"सबद गुरू - सुरत धुन चेला । गुण गोबिंद - नाम धुन बाणी ।"